CARDIZOL SYRUP
कार्डीजोल सिरप

हृदयगत रोग उत्पन्न करने वाले कारकों का विश्लेशण :–

- आधुनिक युग में मानव के अ"ाुद्ध भोजन का प्रभाव
- भोजन में यूरिया व अन्य रासायनिक तत्वों का विद्यमान होना
- अ"ाुद्ध जल
- प्राणवायु में नाना प्रकार की गैसों का विद्यमान होना
- कार्सीनोजैनिक (कैंसर जनित) प्रिजरवेटिव युक्त फास्ट फूड, जंक फूड, कार्बोनेटिड पेय पदार्थ व बेकरी आदि।
- जैविक तरीके से उत्पादित भोज्य सामग्री का शत–प्रति"ात विलुप्त होना
- भोजन में ओमेगा–3 का अभाव एवं ओमेगा–6 की वृद्धि होना
- मानव का नाना प्रकार के न"ाों से ग्रसित होना
- पंच प्रदूषण का व्यापक होना
- म"ाीनी युग की बदोलत शारीरिक पुरसरण क्रिया का निर्बल होना
- मानसिक तनाव

उपरोक्त सभी कारकों में प्रतिकारक एवं सैंकड़ो उपकारक समाहित है परिणामस्वरुप आधुनिक युग में मानव का असाध्य व कष्टसाध्य जानलेवा रोगों से ग्रसित होना स्वभाविक है जिनका मात्र आयुर्वेदिक वनौषधियों द्वारा ही निदान संभव है।

प्रभावकारी जड़ी–बूटियों का परीचय :–

अर्जुन, देवदाली, पान, कलौंजी, अश्वगंधा, गिलोय, हरड़, बहेड़ा, आंवला, शिलाजीत, वनपलाण्डु, भांखपुश्पी, सोभान्जन, दारुहल्दी, कुटकी, सौंठ, कालीमिर्च, पीपल, डीकामाली, निर्गुण्डी, काचनार, चित्रक, लघु कंटकारी, वृहत कंटकारी, इन सभी वनौषधीयों को समकक्ष गुणकारी दुर्लभ वनौषधीयों के क्वाथ/स्वरस द्वारा फोर्टीफाईड कर योग निर्मित किया गया है।

औशधीय गुणधर्म :–

- यह योग ह्दयगत शुद्ध प्राणवायु का संचार करता है एवं दूषित वायु का शमन करता है।
- ह्दयगत धमनियों एवं शारीरिक मेदवृद्धि (मोटापावृद्धि) ना"ाक है एवं ह्दयगत धमनियों के शोथ रोग का शमन करता है।
- ह्दयगत धमनियों जमें रक्त के थक्कों को घुलन"ाील बनाकर धमनियों को सुदृढ़ बनाता है।
- ह्दयगत पे"ाियों के संक्रमण का शमन कर पे"ागत दर्द रोग को जड़–मूल से निवारण करता है।
- यह योग ह्दयघात (हार्टअटैक) जैसी जानलेवा बीमारी से मुक्त कर मानव को जराव्याधी–जरामृत्यु रोग भय से मुक्ति प्रदान करता है।
- यह योग दूषित कॉलेस्टेरोल (बेड कॉलेस्टेरोल) का शमन करता है।
- यह योग ह्दयगत रक्त संचार क्रिया का नियमन कर सबल बनाता है।
- ह्दय शुद्धिकरण हेतु **कार्डीजोल** एक अद्भुत असरारक औषधी है।

जीर्ण रोग निवारण हेतू *निर्देश* :–

- कोरोनरी हार्ट डिजीज (CHD) में कार्डीजोल का नोनी अमृत व बायोमेगा–3 के साथ सेवन करें
- मायोकार्डियल संक्रमण एवं ह्दयगत "ाूल निवारण हेतू कार्डीजोल का ऑर्थोरेक्स के साथ सेवन करें
- मेदवृद्धि (मोटापावृद्धि) रोग में कार्डीजोल का फैट–फ्री व बायोमेगा–3 के साथ सेवन करें
- सामान्य परिस्थितयों में कार्डीजोल का सेवन स्वतंत्र रुप से करें

औशध सेवनकाल :– जीर्ण रोगों में 3 वर्ष पर्यन्त तक सामान्य परिस्थितयों में 3–6 माह तक

मात्रा :– 2–2 चम्मच (10-10ml) प्रातः–सांय चौगुणे जल में मिलाकर लेवें।

दुश्प्रभाव :– कोई नहीं

निर्देश :– औषधीय सेवन योग्य चिकित्सक की देखरेख में ही करें।